4. राजनीतिक कारक (Political Factors) : राजनीति कारकों ने प्रवास को सबसे अधिक प्रभावित किया है। 1947 में भारत-पाक विभाजन के कारण हिन्दू-मुसलमान देशातरण, श्रीलंक में जातीय संघर्ष के कारण तमिलों का भारत में प्रवास, तिब्बत से बौद्ध का भारत आकर बसना, 1917 की रूसी क्रांति के कारण सोवियत संघ से यूरोप की ओर प्रवास इत्यदि प्रवास के राजनीतिक कारण हैं। इजराइल देश के बनने के बाद 150 लाख फिलिस्तीनयिों का अरब में शरण लेना पड़ा । 1970-71 में पाकिस्तान की सेना की बर्बरता से त्रस्त पूर्वी पाकिस्तान (बंग्ला देश) के लगभग कएक करोड़ लोगों ने भारत में शरण ली 18वीं एवं 19 शताब्दी में ब्रिटेन एवं संयुक्त राज्य अमेरिका के लोगों ने दक्षिण अफ्रीका, आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैण्ड आदि देशों के मूल निवासियों को बलपूर्वक वहाँ से भागा दिया एवं नए राष्ट्र की स्थापना की।

3.3 प्रवास के प्रकार (Types of Migration)

प्रवास के कारण दूरी, समय क्षेत्र, इत्यादि के आधार पर कई वर्गों में बाँटा जा सकता है।

कारण या उद्देश्य के आधार पर प्रवास के चार प्रकार हैं– (i) आर्थिक प्रवास (ii) सामाजिक प्रवास (iii) धार्मिक प्रवास (iv) राजनैतिक प्रवास।

दूरी के आधार पर प्रवास के दो प्रकार हैं– (i) लघुदूरी प्रवास और (ii) लम्बी दूरी प्रवास

अवधि तथा क्षेत्र के अनुसार प्रवास के प्रकार

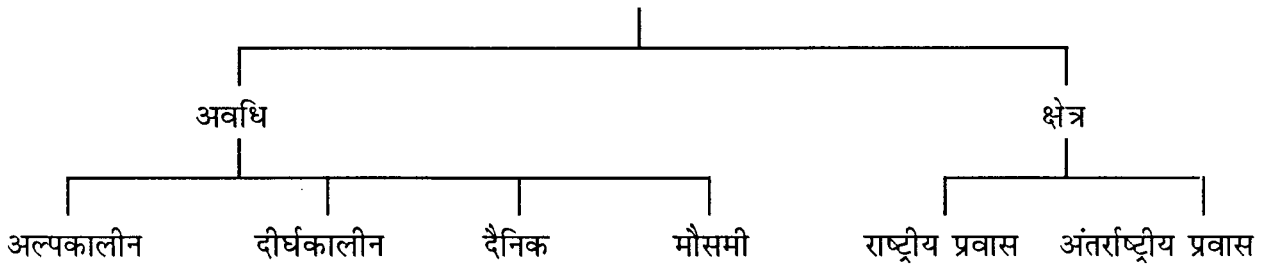

अवधि के आधार पर प्रवास–

(i) अल्पकालीन प्रवास (Short Period Migration) अल्पकालीन प्रवास में व्यक्ति या व्यक्तिसमूह कुछ दिनो या महीनें के भीतर अपने मूल स्थान को लौट आते हैं। जैसे-तीर्थ यात्रा, देशटन, व्यापार सम्बन्धी लघु समय की यात्रा इत्यादि अल्पकालीन प्रवास हैं।

(ii) दीर्घकालीन प्रवास (Long Period Migration) दीर्घकालीन प्रवास लम्बी अवधि के लिए होता है। इसका कोई नियम समय नही होता है। यथा ब्रिटिश काल में चाय बागानों में काम करने के लिए भारत से श्रीलंका, दक्षिण अफ्रीका में लाए गए लोग दीर्घ कालीन प्रवास के उदाहरण हैं।

(iii) दैनिक प्रवास (Daily Migration) इसके अंतर्गत कार्यशील जनसंख्या प्रति दिन अपने कार्य स्थल पर (गाँव या उपनगर से नगर की ओर) सुबह जाती हैं तथा शाम में पुनः वापस लौट जाती है।

(iv) **मौसमी प्रवास (Seasonal Migration)** वर्ष के किसी निश्चित समय या ऋतु में प्रतिवर्ष होनेवाला मानव प्रवास को मौसमी प्रवास कहते हैं। जैसे-हिमालय के ऊँचे क्षेत्रों में रहने वाले लोग शीतऋतु के प्रारंभ होते ही अपने पशुओं के साथ निचली घटियों में चले आते हैं, क्योंकि ऊचे क्षेत्र में चारागाह बर्फ से ढँक जाता हैं। पुनः ग्रीष्मऋतु प्रारंभ होने पर वे पशुओं के साथ ऊपर चले जाते हैं।

(v) **क्षेत्र (Areas) के अनुसार प्रवास** भूगोल अध्ययन में क्षेत्र का अध्ययन महत्वपूर्ण होता है। अतः प्रवास का अध्ययन व वर्गीकरण क्षेत्र के अनुसार किया गया है। क्षेत्रीय विस्तार एवं प्रवास दूरी के आधार पर प्रवास को दो वर्गों में बाँटा गया है–

(i) राष्ट्रीय या आंतरिक प्रवास (National or Inland Migration)

(ii) अंतर्राष्ट्रीय प्रवास (International Migration)

3.4 राष्ट्रीय या आंतरिक प्रवास (National or Inland Migration)

किसी देश की सीमा के भीतर एक राज्य से दूसरे राज्य या एक स्थान से दूसरे स्थान में होनेवाले प्रवास को राष्ट्रीय या आंतरिक प्रवास कहते हैं। इसके दो प्रकार किए जा सकते हैं–

(i) अंतर्प्रान्तीय प्रवास (Inter Provincial or Interstate Migration) तथा

(ii) स्थानीय प्रवास (Local Migration)

(i) अंतर्प्रान्तीय प्रवास (Inter Provincial or Inter State Migration) अंतर्प्रान्तीय प्रवास में एक राज्य के लोग दूसरे राज्य में प्रवास करते हैं। जैसे बिहार, उत्तर प्रदेश से काफी संख्या में लोग दिल्ली, महाराष्ट्र, पं० बंगाल, गुजरात आदि के औद्योगिक नगरों में रोजगार प्राप्ति के लिए जाते हैं। बिहार से काफी संख्या में लोग पंजाब व हरियाणा में कृषि कार्य एवं असम के चाय बगानों से जुड़े हैं। राष्ट्रीय प्रवास में सामान्यतः सरकारी नियंत्रण नहीं होता है। फलतः अंतर्पान्तीय प्रवास अधिक स्वतंत्र एवं एच्छिक होता है।

(ii) स्थानीय प्रवास (Local Migration) : कम दूरी तक होने वाले प्रवास को स्थानीय प्रवास कहते हैं। यथा-एक जिला से दूसरे जिला में होने वाला प्रवास। स्थानीय प्रवास एक जिला की सीमा के अंदर भी हो सकता है। इसे प्रवास की दिशा के आधार पर निमनोवत वर्गों में बाँटा जा सकता है–

(A) गाँव से नगर प्रवास (Rural to Urbon Migration)

(B) नगर से नगर प्रवास (Urban to Urban Migration)

(C) नगर से गाँव प्रवास (Urban to Rural Migration)

(D) गाँव से गाँव प्रवास (Rural to Rural Migration)

(A) गाँव से नगर प्रवास (Rural to Urban Migration)स्थानीय प्रवास प्राय: गाँव से नगर की ओर होता है। गाँवों में रोजगार की कमी होती है। यहाँ शिक्षा, चिकित्सा, मनोरंजन इत्यादि सुविधाओं का अभाव होता है। जबकि नगरों में रोजगार के अधिक अवसर (व्यापार, उद्योग, परिवहन) शिक्षा, चिकित्सा, बिजली मनोरंजन के साधन जैसी सुविधाओं की पर्याप्त उपलब्धि होती है। फलत: इन सुविधाओं से आकर्षित होकर गाँव के लोग नगर की ओर प्रवास करते हैं।

(B) नगर से नगर प्रवास (Urban to Urban Migration): यह प्रवास प्राय: छोटे शहर से बड़े शहर की ओर होता है। सामान्यत लोग उद्योग व्यापार, रोजगार, उच्च शिक्षा चिकित्सकीय सुविधा वाले बड़े शहरों की ओर प्रवास करते हैं। जैसे पटना शहर के लोगों का दिल्ली की ओर प्रवास।

(C) नगर से गाँव प्रवास– यह प्रवास विकसित देशों में अधिक देखने को मिलता है। इसमें उच्च वर्ग के लोग अधिक शामिल होते हैं। वे महानगरों की भीड़ एवं प्रदूषण से मुक्त होने के लिए स्वच्छ नगरों में नौकरी करनेवाले सेवा निवृत्ति के बाद अपने पैतृक गाँव में आ जाते हैं।

(D) गाँव से गाँव प्रवास (Rural to Rural Migration):ऐसे प्रवास कृषि प्रधान क्षेत्रों में देखने को मिलता है। जिस कृषि क्षेत्र में रोजगार की संभावन अधिक होती है, वहाँ दूसरे गाँव से लोग प्रवास करते हैं। जैसे बिहार के ग्रामीण क्षेत्र के लोग पंजाब एवं हरियाणा के कृषि क्षेत्रों में काम करने जाते हैं। जब किसी गाँव में अधिक जनसंख्या एवं सीमित कृषि क्षेत्र हो जाते हैं, तब उस गाँव के लोग नए उपजाऊ कृषि क्षेत्र में बस जाते हैं।

3.5 भारत में आंतरिक प्रवास की प्रवृतियाँ (Trends of Internal Migration in India)

भारत की कुल जनसंख्या 102.7 करोड़ (2001) है जिसमें से 68% जनसंख्या अपने पैतृक स्थान पर ही वास करती है। अर्थात् यहाँ की दो तिहाई आबादी अपने मूलस्थान पर ही रहती है। भारतीय लोगों में जन्मभूमि से लगाव होता है। यहाँ की कृषि प्रधान व्यवस्था, जाति प्रथा, संयुक्त परिवार, अशिक्षा, निर्धनता इत्यादि कारकों ने आंतरिक या राष्ट्रीय प्रवास को नियंत्रित किया है।

इधर हाल के वर्षों में भारत में आंतरिक प्रवास में वृद्धि हुई है। यातायात के साधनों एवं परिवाहन की बारम्बारता में वृद्धि, संचार सेवा में वृद्धि, शिक्षा का विकास, औद्योगिक विकास आदि होने के कारण आंतरिक प्रवास में वृद्धि देखी जा रही है। शिक्षा, चिकित्सा व स्वास्थ्य की सुविधा प्राप्त करने के लिए भी लोग काफी संख्या में प्रवास कर रहे हैं। तीव्र गति से बढ़ती जनसंख्या के कारण उत्पन्न कृषि भूमि पर जनदबाव बढ़ा है। वहीं दूसर ओर बाजार व उद्योगो के विकास के कारण रोजगार में वृद्धि हुई है। फलत: कृषि क्षेत्र से नगरीय क्षेत्र में प्रवास को बढ़ावा मिला है। पहले जहाँ नौकरी प्राप्ति के लिए केवल पुरुष प्रवास करते थे, वहीं अब इस क्षेत्र में महिलाओं का प्रतिशत भी बढ़ा है। महिलायें भी आधुनिक व तकनीक शिक्षा प्राप्त कर अच्छ जीवन जीन के लिए महानगरों में प्रवास करने लगी हैं।

भारत में नगरीय जनसंख्या में वृद्धि ग्रामीण जनसंख्या वृद्धि से अधिक हुई है। 1981 में भारत की नगरीय जनसंख्या जहाँ 23.31 प्रतिशत थी, वह बढ़कर 2001 में 27.81 प्रतिशत हो गई है। नगरीय जनसंख्या में यह वृद्धि मुख्यत: आंतरिक प्रवास का ही परिणाम है। 1960 के बाद देश में व्यापार शिक्षा,

परिवहन, पर्यटन आदि केन्द्रों के रूप में नए-नए नगर विकसित हुए हैं। नगरों के चारों ओर फैला ग्रामीण कृषि क्षेत्र उपनगर के रूप में बदल गए हैं। नगरों का यह रूप आंतरिक प्रवास से ही विकसित हुआ है। जैसे झारखण्ड राज्य के विभिन्न नगरों की अधिकांश लोगों का मूल स्थान बिहार है। बिहार एवं उत्तर प्रदेश से काफी संख्या में लोग मुम्बई, दिल्ली कोलकाता जैसे महानगरों में रोजगार प्राप्ति के लिए प्रवास करते है। पंजाब एवं हरियाणा के कृषि में भी आंतरिक प्रवास हो रहे है। इधर हाल के वर्षों में महाराष्ट्र, हरियाणा, असम इत्यादि क्षेत्रों में क्षेत्रवाद की ऊपजी प्रवृत्ति आंतरिक प्रवास में बाधक बन रही है।

भारत में आंतरिक प्रवास की विशेषताएँ इस प्रकार हैं–

1. हमारे देश में गाँव से नगर, छोटे गाँव से बड़े गाँव तथा नगर से महानगर की ओर प्रवास में तेजी से वृद्धि हो रही है।
2. प्रवास में पुरुषों की संख्या महिलाओं की संख्या से काफी अधिक है।
3. अधिकांश प्रवास एक जिले के भीतर छोटी-छोटी दूरियों के लिए होता है।
4. विवाह के बाद महिलाओं का पति के घर प्रवास होता है।
5. बिहार एवं पूर्वी उत्तर-प्रदेश के मजदूर पूर्वी भारत के खनिज क्षेत्रो में जाकर काम करते हैं।
6. उत्तर बिहार एवं पूर्वी उत्तर प्रदेश के मजदूर फसल के रोपने एवं कटने के समय पंजाब एवं हरियाणा में बड़ी संख्या में प्रवास करते हैं।
7. असम एवं निकटवर्ती राज्यों के चाय बागानों में बिहार, प० बंगाल, उड़ीसा, मध्यप्रदेश, उत्तर प्रदेश से मजदूर आकर काम करते हैं।
8. आंतरिक प्रवास का क्षेत्र महाराष्ट्र, प० बंगाल, गुजरात के औद्योगिक व व्यापारिक क्षेत्र हैं, जहाँ उत्तर-प्रदेश, राजस्थान, बिहार से आकर लोग काम करते है एवं कहीं-कहीं स्थाई रूपसे बस भी गए है।
9. उच्च शिक्षा विशेषतः तकनीकी शिक्षा प्राप्ति के लिए बिहार से काफी संख्या में छात्र के रूप में दक्षिण भारत में प्रवास कर रहे हैं एवं शिक्षा प्राप्ति के बाद प्रायः वहाँ के औद्योगिक नगरों में रोजगार पाकर बस रहे हैं।

3.6 अंतर्राष्ट्रीय प्रवास (International Migration)

जब एक देश का व्यक्ति या व्यक्ति समूह दूसरे में जाकर बस जाता है तब ऐसे प्रवास को अंतर्राष्ट्रीय प्रवास कहा जाता है। अंतर्राष्ट्रीय प्रवास एक ही महाद्वीप के देशों या अलग-अलग महाद्वीपों के देशों के बीच हो सकता है। अंतर्राष्ट्रीय प्रवास बहुसंख्यक या अल्पसंख्यक, ऐच्छिक अथवा बंलात्, स्थायी अथवा अस्थायी किसी भी प्रकार का हो सकता है।

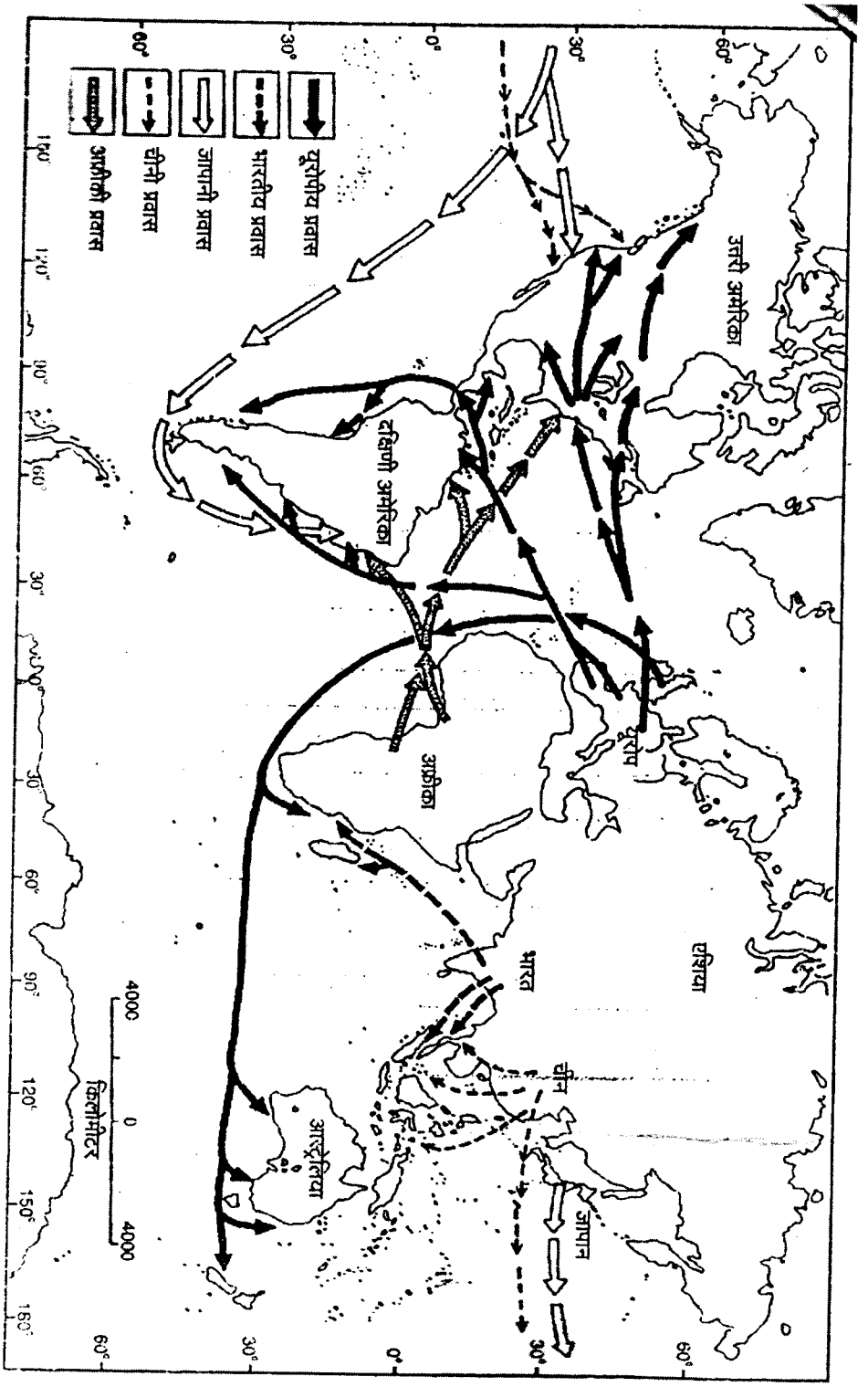

चित्र : विश्व के प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय प्रवास

पिछले तीन शताब्दियों में विश्व के विभिन्न भागों में बड़े पैमाने पर कई महत्वपूर्ण जन-स्थानांतरण हुए हैं। इन जन-स्थानांतरण ने विश्व में जनसंख्या के वितरण एवं वृद्धि को प्रभावित किया है। सम्पूर्ण विश्व में यूरोप और एशिया महाद्वीप उत्प्रवास (Emigration) के प्रधान क्षेत्र रहें हैं, जहाँ से समय-समय पर मानव के बड़े प्रवास हुए हैं। विश्व में हुए प्रवासों को चार वर्गों में बाँटा जा सकता है–

(i) यूरोपीय प्रवास

(ii) अफ्रीक से अमेरिका क्षेत्र में प्रवास

(iii) एशियाई प्रवास तथा

(iv) बीसवीं शताब्दी के कुछ महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय प्रवास

(i) यूरापीय प्रवास–उत्तरी पश्चिमी यूरोप उत्प्रवास की मुख्य भूमि है। यहाँ से सत्रहवीं सदी से लेकर बीसवीं सदी के पूर्वार्द्ध तक प्रवास समुद्रपार देशों के लिए होता रहा है। यूरोप से प्रवास दो क्षेत्रों में हुआ-(a) कटिबन्धी क्षेत्र जहाँ पहुँचना आसान था तथा जैविक संसाधन मौजूद थे। यथा उत्तरी एवं दक्षिण अमेरिका के उष्णकटिबंधीय तटवर्ती क्षेत्र। यहाँ यूरोपीय प्रवासियों ने कपास गन्ना, तम्बाकू, कहवा, चाय, गर्म मशाले, नील इत्यादि की कृषि प्रारंभ की। (b) प्रवास का दूसरा क्षेत्र शीतोषण कटिबन्धीय क्षेत्र था, जहाँ की आबादी विरल तथा जलवायु यूरोपीयों के अनुकूल थी। यू०एस० ए० एवं कनाडा के पूर्वी तटीय भाग, द० अफ्रीका, आस्ट्रेलिया व न्यूजीलैण्ड इसी प्रकार के देश थे, जहाँ यूरोपियों ने अधिक संख्या में प्रवास किया ।

यूरोप से उत्तरी अमेरिका की ओर वृहद् स्थानांतरण हुआ है। अमेरिका की खोज के बाद यूरोपियन देशों के लोग अमेरिका के पूर्वी तट की ओर स्थानांतरण प्रारंभ कर दिए थे, परन्तु सत्रहवीं शताब्द में वृहद् स्तर पर ब्रिटेन, फ्रांस, हालैण्ड आयर लैण्ड से लोगों का प्रवास हुआ। केवल ब्रिटेन से 5 लाख व्यक्ति संयुक्त राज्य अमेरिका के पूर्वी तट पर स्थित न्यू इंगलैण्ड क्षेत्र में जाकर बस गए । 18 वीं शताब्दी में 15 लाख लोग उत्तरी अमेरीका में यूरोप से आकर बस गए। 1820 से 1920 के बीच लगभग 450 लाख यूरोपीय संयुक्त राज्य अमेरिका और कनाडा में जाकर बस गए। यूरोप में जनसंख्या के अधिक दबाव तथा तकनीकी विकास के कारण ही वहीं से नए क्षेत्रों में संसाधनों के दोहन के लिए जनसंख्या का स्थानांतरण बड़े पैमाने पर हुआ।

18 वीं शताब्दी के बाद यूरोपीय राष्ट्रों से जनसंख्या का प्रवास उत्तरी अमेरिका के अलावा लैटिन अमेरिका, आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, एशियाई रूस, अफ्रीकी देशों में भी बड़े पैमाने पर हुआ है। 1820 से 1910 तक लैटिन अमेरिका के मैक्सिकों पश्चिमी द्वीप समूह, ब्राजील, वेनेजुएला, अर्जेन्टीना इत्यादि देशों में लगभग 150 लाख लोगों का प्रवास हुआ।

आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैण्ड में यूरोपीय लोगों का प्रवास 1970 के बाद शुरू हुआ। प्रारंभ में ब्रिटेन के निर्वासित अपराधियों को यहाँ बसाया गया। बाद में व्यापारी व अन्य लोग आकर बसने लगे।

आज आस्ट्रेलिया तथा न्यूजीलैण्ड की कुल जनसंख्या का 90% से अधिक भाग ब्रिटिशवासियों का है। 19 वीं शताब्दी में यूरोपीय लोगों का बड़ी संख्या में प्रवास अफ्रीक महाद्वीप के विभिन्न भागों में हुआ, जहाँ महत्वपूर्ण खनिजों (सोना, ताम्बा, आदि) की प्राप्ति तथा व्यापारिक बागानी फसलों का उत्पादन संभव था। ब्रिटेन के अतिरिक्त फ्रांस, जर्मनी, स्पेन, पुर्तगाल, नीदरलैंड, पोलैंड, इटली, आस्ट्रिया इत्यादि देशों के लोगों ने भी आर्थिक उन्नति एवं उपनिवेश स्थापित करने के उद्देश्य से विभिन्न देशों में प्रवास किया। 19 वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में लगभग 70 लाख जर्मनी विदेशों में प्रवास किए। इटली से लगभग 1 करोड़ लोग प्रवासी बने।

पूर्वी यूरोप के देशों से जनसंख्या का स्थानांतरण एशियाई रूस में हुआ। 1820 के बाद एशियाई रूस में 20 लाख लोगों का प्रवास हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध से पूर्व नौ मिलियन रूसी जनसंख्या का प्रवास साइबेरिया के विभिन्न भागों की आरे हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद 1947-48 में स्थापित इजराइल राष्ट्र में यूरोपीय देशों के यहूदी लोग आकर बस गए। पोलैण्ड बुल्गारिया, रोमानिया देशों से अधिक संख्या में यहूदी आए।

(II) अफ्रीका से अमेरिका क्षेत्र में प्रवास– जब अफ्रीकी देश गुलाम थे तब 16 वीं शताब्दी में यूरोपीय लोग वहाँ के गुलामों को खरीदकर कैरेबियनाई देशों में ले गए तथा वे गुलाम वहीं बस गए। 17 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में अफ्रीकी गुलामों को कृषि बगानों में काम करने के मजदूर के रूप में उत्तरी अमेरिका के तटवर्ती भागों में लाया गया। अनुमानतः ऐसे लोगों की संख्या 120 लाख से 30 लाख के बीच रही होगी।

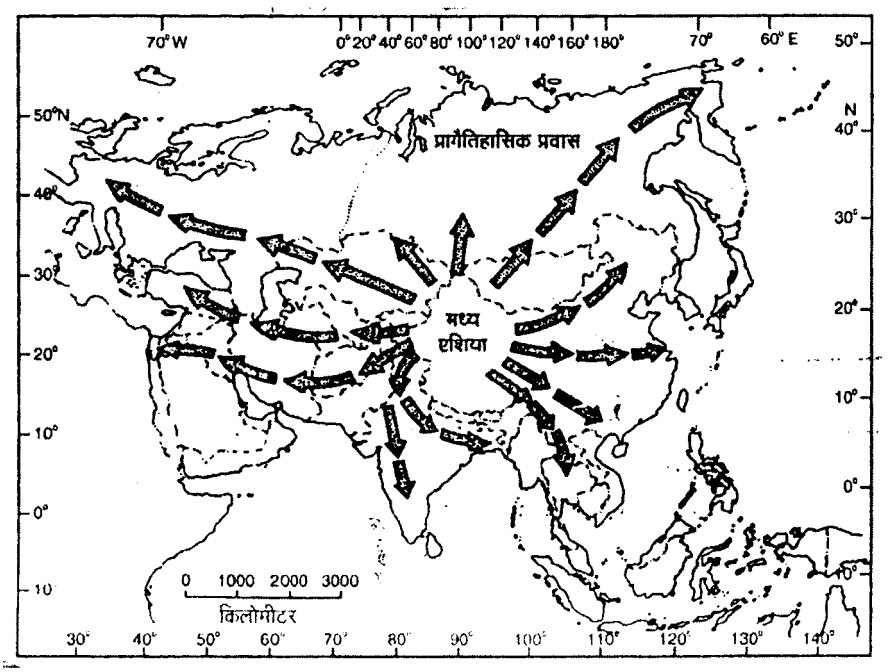

चित्र : मध्य एशिया से प्रागैतिहासिक प्रवास

(III) एशियाई प्रवास–प्रागैतिहासिक काल में मध्य एशिया से मानव प्रजाति का स्थानांतरण विश्व के अन्य क्षेत्रों में हुआ है। 18 वीं शताब्दी से लेकर द्वितीय विश्वयुद्ध तक चीन, भारत, जापान इत्यादि अधिक जनसंख्या वाले देशों से कम जनसंख्या वाले मुख्यत: निकटतर्वी देशें में प्रवास होता रहा।

एशिया में सर्वाधिक प्रवास चीन देश से हुआ है। चीन से लोग कोरिया, मंचूरिया, मलेशिया, थाईलैण्ड, इडोनेशिया, वियतनाम, फिलीपिंस, म्यांमार इत्यादि देशों में जाकर बसे हैं। आज भी मलेशिया की 45% जनसंख्या तथा थाइलैण्ड की 17% जनसंख्या चीनी मूल की है। 20 वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में लगभग 2 लाख चीनी लोग दक्षिण अफ्रीक के चाय व कहवा के बगानों एवं अन्य कार्यों में मजदूरी के लिए गए।

एशियाई देशों में जापान से भी काफी मात्रा में प्रवास हुआ है। यहाँ की बढ़ती जनसंख्या के कारण जापान सरकार ने भी प्रवास को प्रोत्साहन दिया। 1880 से 1900 तक की अवधि में जापान से उल्लेखनीय प्रवास संयुक्त राज्य अमेरिका, हवाईद्वीप कनाडा, ब्राजील, आस्ट्रेलिया, मंचूरिया, कोरिया मलेशिया इत्यादि देशों को हुआ।

भारत के लोगों का प्रवास प्राचीनकाल से धर्म एवं संस्कृति के प्रचार के लिए समीपवर्ती देशों मे होता रहा है। ये समीपवर्ती देश म्यांमार, श्रीलंका, मलेशिया, इंडोनेशिया इत्यादि रहे हैं। ब्रिटिश काल में खेतों तथा बागानों में काम करने के लिए लाखों भारतीयों को दक्षिण अफ्रीका, मारीशस, फिजी द्वीप, गायना ट्रिनिदाद आदि देशों को ले जाया गया। आज मारीशस के राष्ट्रपति और प्रधानमंत्री भारतीय मूल के ही हैं। हजारों की संख्या में भारतीय म्यांमार, श्रीलंका, इंडोनेशिया इत्यादि देशों के चाय बागानों तथा खेतों में काम करने के लिए गए एवं वहीं बस गए। आज लगभग 50 लाख प्रवासी भारतीय विदेशों में हैं।

(IV) बीसवीं शताब्दी के महत्वपूर्ण अंतर्राष्ट्रीय प्रवास–बीसवीं शताब्दी में विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में होनेवाले अंतर्राष्ट्रीय प्रवास निम्नोवत प्रकार से हुए हैं–

(1) 1917 में पूर्व सोवियत संघ में हुई क्रांति के कारण 10 लाख लोग पूर्व सोवियत संघ से भागकर यूरोपीय देशों में जाकर बस गए।

(2) 1947 में भारत-विभाजन के कारण लगभग 3 करोड़ लोगों ने भारत एवं पाकिस्तान में प्रवास किया।

(3) 1948 में इजराइल देश की स्थापना के कारण फिलिस्तीनी लोगों को अरब देशों में शरण लेनी पड़ी।

(4) 1971 में बंगला देश के जन्म के साथ अनेक पाकिस्तानियों को पूर्वी पाकिस्ता (बंगला देश) छोड़ना पड़ा।

(5) कुवैत पर इराक के जबरदस्ती कब्जे के समय कुवैतियों को अपना देश छोड़ने को मजबूर होना पड़ा था।

(6) अफगानिस्तान में गृहयुद्ध के प्रभाव के कारण समय-समय पर वहाँ के लोगों को अपना देश छोड़ने को मजबूर होना पड़ा।

(7) श्रीलंका में चल रही तमिल समस्या के कारण श्रीलंका में चल रही तमिल समस्या के कारण अनेक तमिल ने भागकर भारत में शरण ली है।

वर्तमान शताब्दी में विकासशील देशों से लोग अच्छे रोजगार एवं अवसर की तलाश में विकसित देशों में प्रवास कर रहे हैं। दक्षिण यूरोप व उत्तरी अफ्रीका से उत्तर-पश्चिम यूरोपीय देशों में प्रवास होता रहा है। पिछड़े अफ्रीकी देशों के लोग विकसित अफ्रीकी देशों में बस रहे हैं। मेक्सिको मध्य अमेरिकी देशों से संयुक्त राज्य अमेरिका को प्रवास हो रहा है। भारत, पाकिस्तान, फिलीपींस, कोरिया, तुर्की इत्यादि देशों से सऊदी अरब, कुवैत, संयुक्त अरब अमीरात, बहरीन, यमन इत्यादि देशों की ओर प्रवास हो रहा है।

3.7 सारांश (Summing-up)

प्रवास जनसंख्या के वितरण में परिवर्तन लानेवाला प्रमुख कारक है। प्रवास आदिकाल से होता रहा है। इसमें भाग लेनेवाला व्यक्ति स्वयं प्रभावित होता है, साथ ही साथ वह गंतव्य क्षेत्र को भी प्रभावित करता है प्रवास से सामाजिक-सांस्कृतिक पक्ष समृद्ध होते हैं। आर्थिक प्रगति के अवसर, उच्च शिक्षा की प्राप्ति, चिकित्सा सुविधा, सुरक्षा व न्याय, राजनीतिक स्थायित्व, स्वास्थ्य प्रदद वातावरण, इत्यादि तत्व प्रवास को आकर्षित करते हैं। अत: प्रवास की दिशा प्राय पिछड़े क्षेत्र से उन्नत क्षेत्र की ओर होती है। कभी-कभी उन्न क्षेत्रों में जनसंख्या दबाव व राजनैतिक अस्थिरता के कारण वहाँ से लोगों विकसित क्षेत्रों में प्रवास होता है। फलत: अल्प विकसित क्षेत्र विकसित क्षेत्र में परिणत हो जाता है। विश्व में सर्वाधिक प्रवास यूरोपीय लोगों का हुआ है।

3.8 मॉडल प्रश्न (Model Questions)

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. ''प्रवास शाश्व या अर्द्ध शाश्वत निवास स्थान का परिवर्तन है। इसमें निहित दूरी की कोई सीमा नहीं होती। उक्त कथन किसका है?

(क) डेविड एम० हीर (ख) ली (ग) यू०एन०ओ० (घ) पीटरसन

2. निम्न में कौन सा राष्ट्रीय प्रवास नहीं है?

(क) गांव से नगर की ओर (ख) गांव से गाँव की ओर

(ग) एक शून्य से दूसरे राज्य की ओर (घ) पीटरसन

3. प्रवास के लिए आकर्षक कारक, कौन-सा नहीं है?

(क) राजनीतिक स्थायित्व (ख) रोजगार की सुविधा

(ग) उच्च शिक्षा की प्राप्ति (घ) अशांति

4. किस कारक ने प्रवास को सबसे अधिक प्रभावित किया है?

(क) सामाजिक (ख) राजनीतिक (ग) आर्थिक (घ) प्राकृतिक

5. भारत के महानगरों की जनसंख्या में तीव्रवृद्धि का मुख्य कारण कौन-सा है?

(क) निम्न मृत्युदर (ख) उच्च जन्मदर

(ग) गावों का नगरों से लोगों का प्रवास (घ) नए क्षेत्र का नगर सीमा शामिल होना

6. निम्नलिखित में से कौन-सा देश प्रवास के कारण आबाद हुआ–

(क) मलेशिया (ख) ब्राजील (ग) आस्ट्रेलिया (घ) श्रीलंका

7. मारीशस के प्रधानमंत्री किस मूल के हैं

(क) भारतीय (ख) यूरोपीय (ग) अफ्रीकी (घ) अमेरिकन

8. इजराइल देश की स्थापना किन लोगों के लिए की गई है?

(क) यहूदी (ख) फिलीस्तीनी (ग) मुस्लिम (घ) पारसी

दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. प्रवास से आप क्या समझते हैं? इसके प्रकार की विवेचना कीएिज।
   What do you mean by migration ? Discuss its types
2. आंतरिक प्रवास के कितने प्रकार हैं?
   How many types are there in internal migration?
3. भारत में आंतरिक प्रवास की प्रवृत्तियों पर प्रकाश डाले।
   Throw light upon th trends of internal migration in India
4. अंतर्राष्ट्रीय प्रवास क्या है? प्रमुख अंतर्राष्ट्रीय प्रवासों को व्याख्या करें।
   What is intrnational migration ? Explain the main International migrations.

3.9 संदर्भ पुस्तकें (Reference Books)

1. आर० सी० चंदना – जनसंख्या भूगोल
2. प्रो० हीरालाल – जनसंख्या भूगोल
3. डा० एस०डी० मौर्य – जनसंख्या भूगोल
4. Clarke, John I. – Population Geography

●●●

माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त
(The Malthusian Theory of Population)

पाठ-संरचना (Lesson Structure)

4.0 उद्देश्य (Objective)
4.1 परिचय (Introduction)
4.2 माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत की पृष्ठभूमि (Background of the Malthusian Theory of Population)
4.3 माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत (The Malthusian Theory of Poulation)
4.4. माल्थस के सिद्धांत की व्याख्या (Explanations of the Malthusion Theory)
4.5. मात्थस के जनसंख्या सिद्धांत की आलोचना (Criticism of the Malthusian Theory of Population)
4.6 मात्थस के जनसंख्या सिद्धांत की सत्यता (Validity of the Malthusian Theory of Poulation)
4.7 माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत एवं विकासशील देश (The Malthusian Theory of Polulation and the Developing Countries)
4.8 सारांश (Summing-Up)
4.9 मॉडल प्रश्न (Model Questions)
4.10 संदर्भ पुस्तके (Reference Books)

4.0 उद्देश्य (Objective)

प्रस्तुत पाठ के अध्ययन से हम जान सकेंगे कि

- माल्थस का जनसंख्य सिद्धांत क्या है।
- जनसंख्य किस रूप में बढ़ती है।
- संसाधन में वृद्धि किस रूप में होता है।

- जनसंख्या तथा संसाधन में असंतुलन का क्या परिणाम होता है।
- माल्थूसियन चक्र क्या है।
- माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत कितना सार्थक है।
- माल्थस की चेतावनी का प्रभाव लोगों पर क्या पड़ा।
- विकसित देशों ने किस प्रकार अपनी जनसंख्या को नियंत्रित किया।
- विकासशील देश किस प्रकार माल्थस के विचार से गुजर रहा है।

4.1 परिचय (Introduction)

मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ विभिन्न प्रकार की जनसंख्या सम्बन्धी समस्याएँ उत्पन्न होती रही हैं, इसलिए प्राचीन काल से ही जनसंख्या से सम्बन्धित समस्या में विद्वानों ने रूचि दिखायी है एवं तत्कालीन परिस्थितियों के अनुकूल जनसंख्या सम्बन्धी अपने विचार प्रकट किए हैं। यह सत्य है कि किसी देश के प्राकृतिक संसाधनों के समुचित विदोहन के लिए मानवीय संसाधनों का विकसित होना आवश्यक है, किन्तु जनसंख्या की वृद्धि एक सीमा तक ही देश के आर्थिक विकास में सहायक होती है, लेकिन उस सीमा के बाद वह देश के आर्थिक विकास पर प्रतिकूल प्रभाव डालने लगती है। जनसंख्या की तीव वृद्धि होने के साथ-साथ जनसंख्या-संसाधन अनुपात में असंतुलन होने लगता है तथा संसाधनों का अभाव होने लगता है। इस सम्बन्ध में ब्रिटिश अर्थशास्त्री **थामस राबर्ट माल्थस**, प्रथम व्यक्ति हैं जिन्होंने जनसंख्या के सिद्धांत को निश्चित एवं ठोस आधार प्रदान किया और जनसंख्या समस्या का वैज्ञानिक विश्लेषण प्रस्तुत किया। माल्थस के सिद्धांत के बाद जनसंख्या के कई सिद्धांत प्रतिपादित किए गए, जिनमें दो सिद्धांतों का अध्ययन हम अगले अध्याय में करेंगे। यहाँ हम माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत का वर्णन करेंगे।

4.2 माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत की पृष्ठभूमि (Back ground of the Malthusian Theory of Population)

थामस राबर्ट माल्थस् का जन्म सन 1766 ई० में इंगलैण्ड में हुआ था। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय से उच्च शिक्षा ग्रहण करने के बाद वे पादरी बन गए। सन् 1805 में वे ईस्ट इंडिया कम्पनी के एक कॉलेज में अर्थशास्त्र के प्राध्यापक नियुक्त हुए, जहाँ वे जीवन-पर्यन्त (1834) कार्य करते रहे। चूंकि वे एक पादरी तथा शिक्षक थे, इसलिए मानव-कल्याण के विचार उनमें विकसत हुए।

माल्थस के सिद्धांत पर तत्कालीन सामाजिक आर्थिक परिस्थितियों तथा लेखकों के विचार का अधिक प्रभाव पड़ा। माल्थस ने जिस समय जनसंख्या के सिद्धांत का प्रतिपादन किया, उस समय सारा

यूरोप नेपोलियन की लड़ाई की आग में जल रहा था। इंगलैण्ड विभिन्न देशों से युद्ध में लगा हुआ था। इन युद्धों से वहाँ खाद्यान्न तथा अन्य वस्तुओं की कमी हो गईथी। खाद्यान्न का मूल्य बढ़ने लगा था। एवं बेरोजगारी निर्धनता, भुखमरी, आदि फैलने लगी थी। उस समय औद्योगिक क्रांति अभी मुश्किल से शुरू ही हुई थी तथा जीवननिर्वाह के साधनों में कोई विशेष परिवर्तन नहीं दिखाई पड़ता था। परन्तु जनसंख्या में वृद्धि काफी तेजी से हो रही थी।

तत्कालीन लेखकों **वाल्टर रैले, मैथ्यू हेल, राबर्ट बेलास, बिलियन गाडविन** आदि के विचारों का गहरा प्रभाव **राबर्ट माल्थस** पर पड़ा था। **सर वाल्टर रैले (Sir Walter Raleigh)** ने अपनी पुस्तक History of the World में लिखा था कि यदि युद्ध और बीमारियाँ नियंत्रण नहीं लगाती तो जनसंख्या इतनी बढ़ जाती कि उसका भरण-पोषण कठिन हो जाता है। **सर वाल्टर रैले** ने अपनी पुस्तक The Primitive Origianation of Mankind में विचार दिया था कि जनसंख्या में वृद्धि सामान्यतः मृत्यु संख्या से अधिक होती है और यदि इसे नियंत्रित नहीं किया जाय तो यह गुणोत्तर रूप से बढ़कर 34 वर्षों में दुगुनी हो जाएगी। सन् 1793 में **विलियम गाडविन** की पुस्तक Enquiry Concerning Political Justice And Its Influence On Morals And Happiness प्रकाशित हुई, जिसमे उन्होंने लिखा कि मानव जाति स्वर्णिम युग की ओर बढ़ रही है। तथा जनसंख्या वृद्धि से हानि नहीं बल्कि लाभ की संभावना है। तत्कालीन दरिद्रता और दुखों के लिए सरकार की नीतियों को उन्होंने जिम्मेदार ठहराया। **विलियम गाडविन** के इस आशावादी विचार को माल्थस महोदय ने चुनौती स्वरूप लिया। गाडविन के विचार के विरूद्ध **माल्थस** ने प्रत्येक जनसंख्या वृद्धि को हानिकारक बताया तथा कड़े शब्दों में विरोध किया।

4.3 माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत (The Mathusian Theory of Population)

थामस राबर्ट माल्थस महोदय का दृष्टि कोण मानवतावादी था और उसकी सोच मानव-कल्याण से संबंन्धित थी। उन्होंने अठारहवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों में इंगलैंड तथा यूरोपीय देशो का भ्रमण कर अध्ययन एवं पर्यवेक्षण किया। वे यूरोपीय देशें का भ्रमण का अध्ययन एवं पर्यवेक्षण किया वे यूरोपीय देशों में तीव्र जनसंख्या वृद्धि से चिंतित हो उठे क्योंकि उनमें मानवता थी उन्होंने जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने 1803 में प्रकाशित "An Essay on the Principles of Population" शीर्षक लेख में जनसंख्या के सम्बन्ध में अपनी सिद्धांत प्रतिपादित किया।

सिद्धांत की मान्यताएँ–माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत निम्नलिखित तीन मान्यताओं पर आधारित है–

(1) मनुष्य की प्रजनन शक्ति (Fecundity) स्थिर रहती है जिसके फलस्वरूप संतानोत्पत्ति की इच्छा भी स्वभाविक है।

(2) जीवन स्तर तथा जनसंख्या में सीधा संबन्ध होता है, अर्थात् जीवन स्तर बढ़ने पर जनसंख्या में वृद्धि होगी क्योंकि अधिक बच्चों का लालन-पालन किया जा सकेगा।

(3) कृषि में उत्पत्ति ह्रास नियम (Law of Diminishing Return) क्रियाशील होता है।

माल्थस की जनसंख्या का नियम (Mathusian Law of of Population) : माल्थस की जनसंख्या के नियम को इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है– " उत्पादन कलाओं की एक दी हुई स्थिति के अंतर्गत जनसंख्या जीवन निर्वाह के साधनों से अधिक तीव्र गति से बढ़ने की प्रवृत्ति दिखाती है। "(In a given state of the art of production population trends to outrun subsistance")

यह सिद्धांत बतलाता है कि देशों में जनसंख्य की वृद्धि दर वहाँ की खाद्य सामग्री उत्पादन वृद्धि दर से अधिक पायी जाती है, जिससे जनसंख्या और खाद्य सामग्री के बीच बढ़ते हुए असंतुलन की स्थिति प्राप्त होती है। इस असंतुलन पर काबू पाने के लिए जनसंख्या वृद्धि पर नियंत्रण आवश्यक है।

4.4 माल्थस सिद्धान्त की व्याख्या (Explanation of the Malthurian Theory)

माल्थस के सिद्धांत की मुख्य बातें (Main features) निम्नलिखित हैं–

(1) जनसंख्या में गुणोत्तर वृद्धि (Geometric Increase in Population) माल्थस के अनुसार यदि मनुष्य के स्वभाविक प्रजनन प्रवृत्ति में कोई रुकावट नहीं आए तो जनसंख्या ज्यामितीय या गुणोत्तर अनुपात (1 : 2 : 4 : 8 : 16 : 32 : 64 आदि) में बढ़ती जाती है। उनके अनुसार किसी अवरोधक के अभाव में जनसंख्या 25 वर्षों में दो गुनी हो जाती है।

(2) खाद्य पदार्थों में अंकगणितीय वृद्धि (Arithmetic Increase in Food materials) : माल्थ के अनुसार खाद्य पदार्थों में वृद्धि अंकगणितीय अनुपात (1 : 2 : 3 : 4 : 5 : 6 : 7 : 8 आदि) से होती है।

(3) जनसंख्या और खाद्य पदार्थों में असंतुलन (Disbalance between population and food materials) माल्थस के अनुसार जनसंख्या की वृद्धि-दर खाद्य पदार्थों की वृद्धि दर से अधिक होने के कारण दोनों का अंतराल बढ़ता जाता है। फलस्वरूप जनसंख्या और जीविका के साधनों में असंतुलन उपलब्ध हो जाता है। **माल्थस** ने निष्कर्ष निकाला था कि 200 वर्षों में खाद्य पदार्थों की आपूर्ति और जनसंख्या के बीच 9 : 256 का अनुपात होगा जो 300 वर्षों में दोनों के बीच असंतुलन कल्पना से काफी अधिक हो जाएगा। फलस्वरूप बेरोजगारी, गरीबी, भुखमरी आदि कष्टकारी दशाएँ उत्पन्न हो जाएगी। **माल्थस** ने यह भी कहा कि ''प्रकृति की खाने की मेज सीमित अतिथियों के लिए है, अत: बिना निमंत्रण के आनेवाले को अवश्य ही भूखो मरना पड़ेगा (The table of the nature is laid for limited number of guests an those who come uninvited must starve.")

जनसंख्या तथा खाद्य पदार्थों में असंतुलन को चित्र संख्या 01 द्वारा समझा जा सकता है।

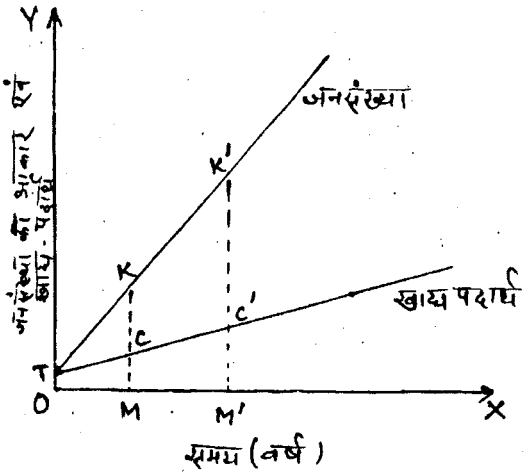

चित्र : जनसंख्या तथा खाद्य पदार्थों में असंतुलन

उपर्युक्त चित्र में × अक्ष पर समय (वर्ष) तथा Y = अक्ष पर जनसंख्या आकार और खाद्यसामग्री को लिया गया है। चित्र से स्पष्ट है कि समय बढ़ने के साथ-साथ जनसंख्या एवं खाद्य-प्रदार्थ दोनों में वृद्धि हो रही है, किन्तु खाद्य सामग्र की अपेक्षा जनसंख्या में अधिक तीव्र गति से वृद्धि हो रही है, जिससे जनसंख्या और खाद्य सामग्री के बीच असंतुलन की स्थिति गंभीर होती जा रही है। चित्र में O समय बिन्दु पर जनसंख्या और खाद्य-पदार्थ दोनों OT के बराबर है। किन्तु OM समय बीत जाने पर अर्थात् M समय बिन्दु पर खाद्य सामग्री की तुलना में जनसंख्या में CK अधिक वृद्धि हुई है तथा M' समय बिन्दु पर जनसंख्या और खाद्य सामग्री के बीच और भी अधिक अंतर C'K' हो गया है।

(4) जनसंख्या नियंत्रण के उपाय एवं माल्थूसियन चक्र (Population Check and Malthusian Cycle) माल्थस के अनुसार तीव्रगति से बढ़ती हुई जनसंख्या दो तरीके से नियंत्रित हो सकती है। (1) नैसर्गिक (Natural) तथा (ii) कृत्रिम (Artificial)

(i) नैसर्गिक नियंत्रण एवं माल्थ्यूसियन चक्र (Natural or Positive Checks and Malthusian Cycle)— खाद्यान्न की अपेक्षा जनसंख्या तीव्रगति से बढ़ती है, इसलिए प्रत्येक देश में कुछ समय बाद एक ऐसी स्थिति आ जाती है जब खाद्यान की कमी आ जाती है। यह अति जनसंख्या (Over Population) की स्थिति है। ऐसी स्थिति में प्रकृति जनसंख्या पर रोक लगाती है, अर्थात् अकाल, महामारी, बाढ़, भूकम्प, युद्ध इत्यादि लागू होने लगते हैं और इनसे देश में बड़ी विपत्ति फैलती है तथा लाखों व्यक्तियों की आसामायिक मृत्यु हो जाती है। प्रकृति द्वारा लगाए गए प्रतिबन्धों को माल्थस ने नैसर्गिक प्रतिबन्ध (Positive Checks) कहा है। इन नैसर्गिक प्रतिबन्धों द्वारा जनसंख्या में कमी होती है और जनसंख्या का खाद्यान्न के साथ संतुलन स्थापित हो जाता है। मानव की बढ़ने की स्वाभाविक इच्छा शीघ्र कार्य करने लगती है, जनसंख्या पुनः बढ़कर खाद्यान्न की पूर्ति से अधिक हो जाती है। प्रकृति पुनः नैसर्गिक प्रतिबन्धों द्वारा बढ़ी हुई जनसंख्या को कम करके उसका खाद्यान्न के साथ संतुलन स्थापित कर देती है। घटनाओं का यह चक्र (Cycle) चलता रहेगा, इसे माल्थ्यूसियन चक्र (Mathhusian Cycle) कहते हैं। माल्थ्यूसियन चक्र को चित्र संख्या-2 द्वारा स्पष्ट किया गया है।

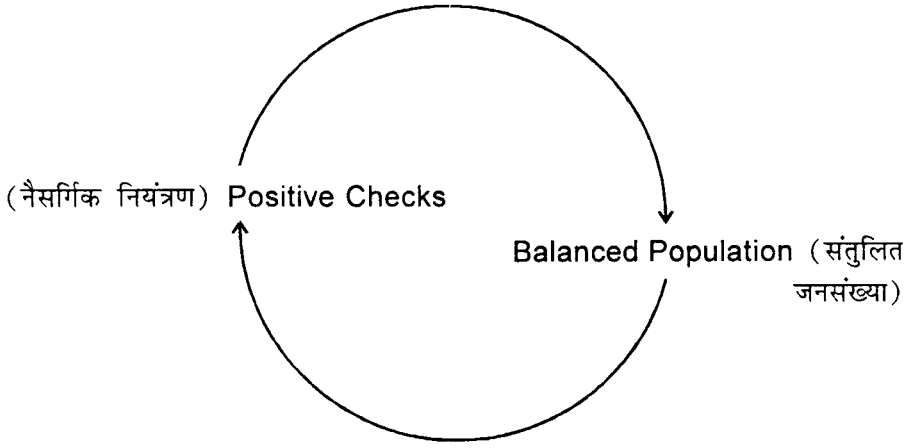

चित्र संख्या : Population (जनाधिक्य)

(ii) कृत्रिम नियंत्रण (Artificial or Preventive Checks) नैसर्गिक प्रतिबन्धों से बचने के लिए माल्थस ने सुझाव दिया कि मनुष्य को स्वयं जनसंख्या पर रोग लगानी चाहिए। इसके लिए उन्होंने देर से विवाह करने, संयम से रहने तथा ब्रह्मचय जीवन व्यतीत करने का सुझाव दिया। इन प्रतिबन्धों को माल्थ्यूस ने 'निवारक प्रतिबन्ध'' (Preventive Cheeks) कहा। उन्होंने केवल नैतिक संयम की बात की, आधुनिक कृत्रिम साधनों के बारे में कुछ नहीं कहा।

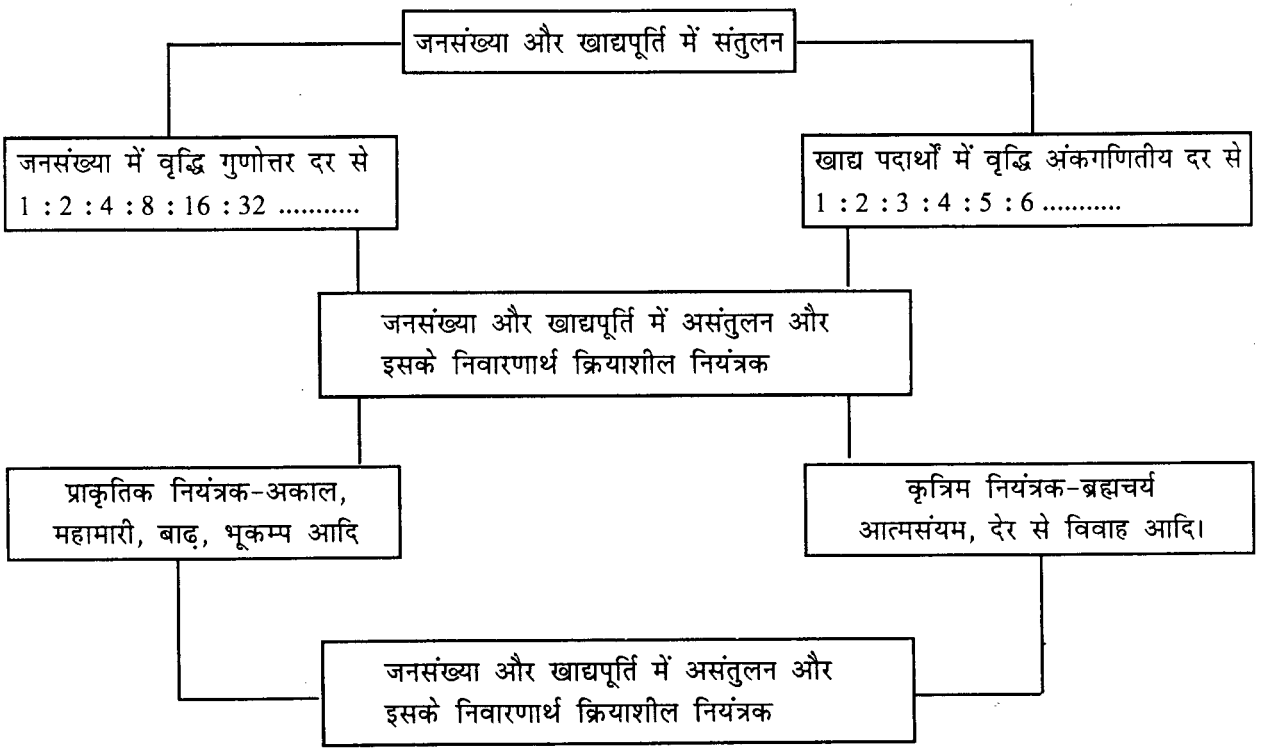

चित्र : माल्थस के सिद्धान्त का चार्ट द्वारा प्रदर्शन

4.5 माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त की आलोचना (Criticism of the Malthusian Theory of Population)

माल्थस के सिद्धांत की मुख्य आलोचनाएँ इस प्रकार हैं-

(i) **मनुष्य की प्रजनन शक्ति स्थिर नहीं रहती**–माल्थस ने इस जीवशास्त्रीय सिद्धांत (Biological Theory) की उपेक्षा की कि सभ्यता के विकास के साथ मनुष्य की प्रजनन शक्ति कम होती है, स्थिर नहीं रहती है।

(ii) **जीवन स्तर ऊँचा होने के साथ जनसंख्या**– घटती है बढ़ती नहीं। यूरोपीय देशों तथा अन्य विकासशील देशों का अनुभव यह साबित करता है कि आर्थिक सम्पन्नता तथा जीवन स्तर में वृद्धि के साथ जनसंख्या में कमी होने की प्रवृति क्रियाशील होने लगती है।

(iii) **सिद्धांत का गणितात्मक रूप उचित नहीं**–इतिहास गवाह है कि जनसंख्या में वृद्धि ज्यामितीय गति तथा खाद्य-पदार्थों में वृद्धि अंकगणितीय गति से नहीं होती है। वास्तव में जनसंख्या या खाद्य पदार्थ के वृद्धि की कोई निश्चित गणितात्मक रूप नहीं दिया जा सकता है।

(iv) **जनसंख्या वृद्धि सदैव हानिकारक नहीं**–माल्थस के अनुसार जनसंख्या की वृद्धि देश के लिए हानिकारक होती है, लेकिन यह हमेशा सही नहीं होता है। किसी देश में जनसंख्या के कम होने पर वहाँ मौजूद संसाधन का दोहन सही रूप में नहीं हो पाती। वहाँ जनसंख्या की प्रत्येक वृद्धि उत्पादन को बढ़ाती है तथा देश के हित में होती है।

(v) **तकनीकी विकास की अपेक्षा**–माल्थस ने मनुष्य की उत्पादन क्षमता और तकनीकी विकास की अवहेलना की है। जनसंख्या वृद्धि से श्रमशक्ति बढती है जो अतिरिक्त उत्पादन में सहायक होती है। तकनीकी विकास तथा प्रशिक्षण के मुख्य कार्य में वृद्धि होती है।

(vi) **नैसर्गिक प्रतिबंधों का होना अति जनसंख्या का सूचक नहीं**–माल्थस के मतानुसार अति जनसंख्या होने पर नैसर्गिक प्रतिबन्ध क्रियाशील होते हैं। किन्तु जिन देशों में न्यून जनसंख्या है वहाँ भी प्राकृतिक विपत्तियाँ पाई जाती हैं।

(vii) **कृत्रिम नियंत्रण अव्यावहारिक**-जनसंख्या के लिए **माल्थस** ने ब्रह्मचार्य पालन तथा जनसंख्या नियंत्रण के अन्य कृत्रिम उपायों का विरोध किया है। उनके द्वारा सुझाए गए उपाय सामान्य लोगों के लिए कठिन तथा अव्यावहारिक है।

(viii) **सिद्धांत सर्वव्यापक नहीं**– माल्थ का सिद्धांत विकसित अमेरिका तथा पाश्चात्य देशों में

लागू नहीं होता है। इन देशों में दम्पत्ति अधिक बच्चे नहीं चाहते हैं। जनसंख्या नियंत्रण के लिए वे कृत्रिम उपाय अपनाते हैं। फ्रांस जैस देशों में जनसंख्या ह्रास की समस्या उत्पन्न हो गयी है।

(ix) **जनसंख्या की तुलना कुल राष्ट्रीय आय से करनी चाहिए–** माल्थस ने जनसंख्या की तुलना देशों के केवल खाद्यान्न उत्पादन से किया है, जो उचित नहीं है। आधुनिक अर्थशास्त्रियों के अनुसार एक देश की जनसंख्या की तुलना राष्ट्रीय आय से करनी चाहिए। एक देश में खाद्यान्न का उत्पादन कम हो सकता है, परन्तु यदि वह औद्योगिक दृष्टि से विकसित है तो वह अपने औद्योगिक उत्पाद के बदल में दूसरे कृषि प्रधान देशों से खाद्यान्न मंगा सकता है और अधिक जनसंख्या का पालन-पोषण कर सकता है।

4.6 माल्थस के जनसंख्या सिद्धान्त की सत्यता (Validity of the Malthusian Theory of Population)

माल्थस के सिद्धांत की काफी आलोचना हुई है, परन्तु इन आलोचनाओंके बावजूद माल्थस के सिद्धांत में सत्यता के अंश हैं। जिसकी हम अवहेलना नहीं कर सकते है। निम्नलिखित कारणों से इस सिद्धांत का महत्त्व आज भी अधिक है

(1) **सेम्युलसन (Semuelson)** के अनुसार "माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत का आज भी जीवित प्रभाव है।" यह सिद्धांत कृषि भूमि में उत्पत्ति ह्रास नियम के क्रियाशीलन पर आधारित है। उत्पत्ति ह्रास नियम आज भी उतना ही संगतपूर्ण है, जितना कि भूतकाल में था।

(2) यदि जनसंख्या की समस्या पर सम्पूर्ण संसार के संदर्भ में विचार किया जाय तब यह स्वीकार करना पड़ेगा कि निर्वाह साधनों की तुलना में कुल जनसंख्या तेजी से बढ़ी रही है। **एडवर्ड ईस्ट** (Edward East) के शब्दों में "यदि जनसंख्या इसी गति से बढ़ती रही तब संसार का कृषि क्षेत्र बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए खाद्य सामग्री जुटाने के विचार से अपर्याप्त पड़ जाएगी।

(3) माल्थस के नियम की इस सत्यता की उपेक्षा नहीं की जा सकती कि यदि किसी प्रकार के प्रतिबन्ध न हों तो जनसंख्या तीव्र गति से बढ़ेगी।

(4) यद्यपि अमेरिका तथा पश्चिमी देशों में जनसंख्या तेजी से नहीं बढ़ी है, परन्तु यह माल्थस की चेतावनी का ही परिणाम है कि वहाँ के लोगों ने संतति-निग्रह के कृत्रिम उपायों का इतना अधिक प्रयोग किया है कि जनसंख्या वृद्धि अत्यंत मंद हो गयी है।

(5) माल्थस के इस विचार में सत्यतता है कि जनसंख्या और खाद्यपूर्ति के बीच असंतुलन होने पर प्राकृतिक नियंत्रण क्रियाशील हो उठते हैं। वास्तव में आर्थिक रूप से पिछड़े देशों में जहाँ जनसंख्या नियंत्रण के कृत्रिम उपाय कम अपनाया जाता है, वहाँ जन्मदर

ऊँची है तथा इन देशों में प्राकृतिक प्रकोपों के कारण प्रतिवर्ष लाखों की संख्या में असामायिक मृत्यु हो जाती है।

(6) जब किसी देश में जनसंख्या उस सीमा तक बढ़ जाती है जहाँ भूमि की गंभीर समस्या उत्पन्न हो जाती है तब प्रतिव्यक्ति आय में कमी के कारण निर्धनता, बेरोजगारी, भुखमरी आदि का बढ़ना स्वाभाविक है जिसका समाधान जनसंख्या में कमी के द्वारा ही हो सकता है क्योंकि भूमि को बढ़ाना संभव नहीं है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत में सत्य का कुछ अंश अवश्य है जिसके कारण ही यह तीव्र आलोचनाओं के बावजूद आज भी महत्वपूर्ण बना हुआ है। इस संदर्भ में क्लार्क महोदय ने भी कहा है कि माल्थस के सिद्धांत की जितनी अधिक अलोचनाएँ हुई हैं, उसमें उतनी ही अधिक दृढ़ता आ गई है। **मार्शल, कोसा** आदि अनेक अर्थशास्त्रियों ने **माल्थस** के सिद्धांत का समर्थन किया है।

4.7 माल्थस का जनसंख्या सिद्धान्त और विकासशील देश (The Malthusian Theory of Population and the Developing Countries)

माल्थस का जनसंख्या सिद्धांत विकासशील देशों में सटीक रूप से लागू होता है। उन्होंने जनसंख्या के ज्यामितीय वृद्धि की जो बात की उसका मुख्य उद्देश्य जनसंख्या की तीव्र वृद्धि को बतलाना था तथा लोगों को कठोर शब्दों में समझाना था। उनका यह निष्कर्ष सत्य है कि कृत्रिम प्रतिबन्धों के अभाव में जनसंख्या तेजी से बढ़ती है। माल्थस के इस निष्कर्ष में भी सत्यता का अंश मौजूद है कि जनसंख्या और खाद्यान्न के बीच असंतुल होने से प्राकृतिक नियंत्रण क्रियाशील हो उठते हैं। **सैम्युलसन (Samuelson)** के शब्दों में ''भारत, चीन तथा संसार के अन्य भागों में, जहाँ जनसंख्या और खाद्य पूर्ति में संतुलन महत्वपूर्ण समस्या है, जनसंख्या का व्यवहार समझने के लिए माल्थस के सिद्धांत में आज भी सत्यता-तत्व महत्वपूर्ण है।'' अनेक विकासशील देशों में जनसंख्या विस्फोट की स्थिति मौजूद है। विकसित देशों की तुलना में यहाँ जन्मदर और मृत्युदर बहुत ऊँची है। तेजी से बढ़ती हुई जनसंख्या के कारण इन देशों में नियोजन-विकास का प्रयास निष्फल होते दिखाई देते है। फलतः इन देशों में बेरोगारी भुखमारी, कुपोषण और निर्धनत सर्वत्र व्याप्त है। विकासशील देशों में प्राकृतिक विपदाएँ भी अधिक होती हैं। यद्यपि इन देशों में चिकित्सा व स्वास्थ्य सेवाओं के विस्तार के कारण मृत्युदर में गिरावट आयी है, तथापि विकसित देशों की तुलना में यहाँ मृत्युदर अधिक है। यहाँ बाल मृत्युदर तथा स्त्री मृत्युदर अधिक है। यहाँ बाल-मृत्युदर तथा स्त्री-मृत्युदर काफी ऊँची है।

तालिका-1 में विकसित देशों का विकासशील देशों की जन्म मृत्युदर से तुलना की गई है।

तालिका-1 में कुछ चुने हुए विकसित व विकासशील देशों में जन्मदर, मृत्युदर व शिशु मृत्युदर

विकसित देश	जन्मदर	मृत्युदर	शिशु मृत्युदर
फ्रांस	13	9	4
यू० के०	14	10	5
यू० एस० ए०	16	8	7
स्वीडन	14	10	3
कनाडा	15	7	13
रूस	11	17	13
जर्मनी	10	10	4
जापान	10	8	3
अफगानिस्तान	50	321	165
अंगोला	51	24	145
यमन	49	10	75
नाइजीरिया	45	13	100
इथोपिया	49	18	105
पाकिस्तान	41	10	85
कीनिया	45	15	78
भारत	29	8	64
चीन	19	6	32

विकासशील देशों में संतति निग्रह के उपायों पर अत्यधिक बल दिया जा रहा है। चीन में ''एक परिवार एक बच्चा'' का नारा देकर परिवार नियोजन का कार्यक्रम कठोरत से चलाया जा रहा है, फलस्वरूप वहाँ जन्मदर काफी घटी है। भारत में भी परिवार नियोजन से सम्बन्धित नियम बने हैं परन्तु उनका पालन कठोरता से नहीं किया जा रहा है। विकासशील देशों में अशिक्षा, कुपोषण, अंधविश्वास, निर्धनता आदि के कारण जनसंख्या नियंत्रण के कृत्रिम उपाय का अधिक उपयोग नहीं हो पा रहा है, फलस्वरूप जनसंख्या तेजी से बढ़ रही है। इन देशों में जनसंख्या विस्फोटक हो गई है। ये सारी बातें माल्थस के जनसंख्या सिद्धांत की सत्यतता प्रमाणित करती हैं।